20–6–67 ओमशांति रात्रिक्लास

रुहानी बाप बिना इतने बच्चे कोई को हो नहीं सकते हैं। ऐसा कोई बाप नहीं होगा जो कहेंगे कि सब आत्मायें हमारे बच्चे हैं। हम ब्रदर्स हैं। अब तुम बच्चे जानते हो कि हम भाई2 भी हैं। तो भाई–बहन भी हैं। अब भाई–बहनों को वर्सा मिलना चाहिए बाप से। किस बाप से?अगर प्रजापिता ब्रह्मा को कहें तब तो भाई–बहन के हिसाब से सिर्फ भाइयों को ही मिलता है। अगर शिवबाबा कहें तो भी आत्मायें बच्चे ठहरे। सबको वर्सा मिल जाता। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे भाई–बहन हो जाते हैं तो बहन को वर्सा मिल नहीं सकता है। अभी तुमको प्रजापिता ब्रह्मा से तो वर्सा मिलना नहीं है। वर्सा मिलता है शिवबाबा से। अविनाशी ज्ञान रत्नों का वर्सा भी ज्ञान सागर शिवबाबा ही देते हैं। ब्रह्मा नहीं देते हैं। सभी को ही बेहद के बाप से वर्सा मिलता है। वो ही ज्ञान का सागर है। ब्रह्मा ज्ञान का सागर नहीं है। यह भी प्वाइंट बच्चों को सुनानी थी कि पूज्य शिवबाबा की पूजा होती है। तुम तो हो सालीग्राम। सालीग्रामों की भी पूजा होती है। फिर तुम देवता बनते हो। आत्मा प्योर बन जाती है तो भी वो पूजी जाती है और साथ2 तुम इस पढ़ाई से देवता बनते हो तो देवता रूप में भी पूजे जाते हो। शिवबाबा तो एक ही पूज्य है। वो देवता नहीं बनते हैं। सिर्फ एक की ही पूजा होती है। तुम दो बार पूज्य बनते हो। तो इसमें भी तुम्हारा पद जास्ती है। यह प्वाइंट्स बच्चों को ही सुनानी होती हैं। नये तो कोई मुश्किल ही समझेंगे। नये को तो पहले2 बाप की महिमा भारत की महिमा सुनानी है। भारत ही स्वर्ग बनता है। उंच ते उंच भगवान भारत में ही आते हैं। अब वो शिवबाबा तो है निराकार । अब वो आया कैसे?किस तन में?प्रश्न तो उठता है ना। कृष्ण में तो आ नहीं सकते। वो होत ही हैं सतयुग में। वहां पर तो बाप को आने की दरकार ही नहीं है। अच्छा, फिर उधर कहते हैं कि भागीरथ ने गंगा लाई। अब मनुष्यों की जटाओं में से पानी तो आ नहीं सके। भागीरथ कोई नाम नहीं है। भागीरथ माना कि भाग्यशाली रथ। रथ का नाम चाहिए ना। जैसे परमपिता परमात्मा का नाम है शिव। उनके नाम का किसको भी पता नहीं है। बाप कहते हैं मैं तो साधारण बूढ़े तन में आता हूँ। यह भाग्यशाली रथ ठहरा ना। जो इसमें बाप आकर प्रवेश करते हैं। भगवान के काम में कोई शरीर आवे वो सिफ एक ही है। बाप कहते हैं कि मुझे प्रकृति का आधार लेना पड़ता है। बच्चे जानते हैं कि बरोबर बाप आकर सारे विश्व को हैविन बना देते हैं। भारत ही विश्व का मालिक बनता है। उनका ही राज्य था। अभी थोड़े ही कोई का राज्य है। सतयुग में छोटा झाड़ होता है। गायन भी है ———————————————— ज्ञान सूर्य ,ज्ञान चंद्रमा और बच्चों को ज्ञान सितारे कहा जाता है। सितारे फिर कहते हैं तुम मात–पिता———— यह किनको कहते हैं?गायन जो है उनको फिर करैक्ट करना होता है। बाप आकर सभी बातों का सार बताते हैं। ज्ञान सागर तो वो बाप ही है। भक्ति में ज्ञान नहीं है। ज्ञान मिलता ही है संगमयुग पर। जिससे ही दिन होता है। भारत स्वर्ग बन जाता है। सतयुग त्रेता में भक्ति होती ही नहीं। सभी सुख में हैं ;क्योंकि भगवान नई सृष्टि रचते हैं ना। वो है ही सुखधाम। यह ज्ञान भी तुमको अभी ही मिल रहा है। प्रारब्ध मिले फिर ज्ञान खतम हो जावेगा। ज्ञान परम्परा से नहीं चल सकता है। तुम बच्चों को ही रचता और रचना की आदि,मध्य,अंत की नालेज सुनाते हैं। त्रिकालदर्शी सिर्फ तुमको ही बना रहे हैं। देवतायें भी त्रिकालदर्शी नहीं हैं। शूद्र भी त्रिकालदर्शी नहीं होते हैं। अगर कोई कहते हैं कि फलाना त्रिकालदर्शी (था) तो वो झूठ बोलते हैं। तुम मानेंगे नहीं। तुम जानते हो कि यह ज्ञान बाप ही हर बार देते हैं जिससे ही विश्व सतयुग बन जाता है। अभी तो विश्व भर सारा नर्क है। नई दुनियां में तो देवी देवतायें ही थे। स्वर्ग था। फिर वही दुनियां पुरानी होती है। कल्प बाद फिर रावणराज्य शुरू होता है। देवतायें वाममार्ग में चले गये। फिर उनको देवी देवता नहीं कहा जाता है। तुम्हारी प्वाइंट्स तो ढेर हैं। सात रोज का कोर्स लेना पड़े। ठहरेंगे तो वो ही जिनको ————————। फिर अपना प्रोग्राम बदलकर

भी आवेंगे। सुनेंगे जरूर। ऐसे तो कोटों में कोउ ही निकलते है। जो उठ सकते हैं। बच्चे जानते हैं कि हम शिवबाबा पास जाते हैं। वो तो है निराकार। उनके पास कैसे जा सकते हैं। फिर कहना पड़े कि हम तो बापदादा पास जाते हैं। यह भी बहुत मुश्किल कोई की बुद्धि में बैठता है। जिनकी ही बुद्धि में बैठता है वो ही श्रीमत पर चलते हैं। जरूर चलेंगे। श्रीमत पर चलने वाले को सपूत कहेंगे। बाप कहते हैं तुम्हारे पास क्या है?पोतामेल बताओ तो देखेंगे कि कुछ लगा सकते हो या नहीं?इतना धन है जो 8/10वर्ष में पूरा हो सकता है तो भी कहेंगे कि यह पड़ा रहे। देखेंगे इनके पास बहुत धन है। तो कहेंगे कि सफल करो। हास्पिटल यूनिवर्सिटी निकालो। तो मनुष्य–––पावें। 21जन्मों के लिए निरोगी काया मिल जावेगी। अज्ञान काल में मनुष्य इतना खर्चा करते हैं। मिलता क्या है?कुछ भी मिलन का नहीं है। तुम जानते हो यह मंदिर आदि कुछ भी रहने का नहीं है। मनुष्य थोड़े ही समझते हैं। कहो तो भी मानेंगे नहीं। बाप कहते हैं मैं आया हूँ पतित को पावन बनाकर ले जाने लिए। मुफ्त में पैसे गंवाते रहते हो। इससे तो यह रुहानी हास्पिटल निकालो जिससे ही मनुष्य से देवता बन जावे। मंदिर आदि बनाते हैं तुम कहेंगे यह तो पैसे गंवा रहे हैं। विनाश सामने खड़ा है। भक्तिमार्ग अब मुर्दाबाद होता है। बाप बैठ सृष्टि की आदि,मध्य,अंत का राज बताते हैं। कहते हैं मैं आया हूँ भारत को हैविन बनाने। हेल का विनाश करवाने। समझाने पर कोई को तीर लग जावेगा। तो मंदिर बनाना भी बंद कर देंगे। बोलो मंदिर के साथ एक हाल भी बनाओ। जहां पर मनुष्यों को समझाया जावे। इन ल. ना. ने कैसे यह पद पाया। बाप ने राजयोग सिखाया जिससे ही मनुष्य से देवता बने। अभी तो कलियुग का अंत है। अभी तुम नर से नारायण बनने का सच्चा2 ज्ञान सुनते हो। तुम्हारे सामने ही वो फिर झूठी कथायें सुनाते रहते हैं। सत्यनारायण की कथा करते रहते हैं तो तुमको बुलाते हैं। निमंत्रण देते हैं तो जाना चाहिए। कोई मरते हैं तो फिर ब्रह्माकुमारियों को बुलाते हैं ;क्योंकि वो शांति में और खुशी में लाती हैं। तुमको तो बहुत ही बुलावेंगे। तुम जाकर सत्यनारायण की कथा सुनावेंगे। सुनने के बदले बैठकर सुनाना चाहिए। तुम्हारी सर्विस तो बहुत चलनी है ;परंतु इतना हौसला अभी चढ़ा नहीं है। बाबा कहते हैं श्मशान में जाओ। वहां तुमको बहुत ग्राहक मिलेंगे। वहां पर प्रदर्शनी लगाकर बैठ समझाना चाहिए। जब तक कि मुर्दा जलकर पूरा हो जावे। अच्छा, कोई ने ना भी सुना,हार्टफेल नहीं होना चाहिए। फिर दूसरे दिन,तीसरे दिन जाना चाहिए। सर्विस बहुत है। ओम।

21–6–67 रात्रीक्लास– चना भी बेचे तो रचता और रचना का राज बैठ सुनावे तो मनुष्य वंडर खावेंगे। जो ज्ञान ऋषि–मुनी कोई नहीं देते थे,वो यह सुना रहा है। झट समझेंगे यह कोई ब्रह्माकुमारी का पाला हुआ है। तुम बच्चों को ज्ञान की लोरी दी जाती है। ज्ञान की लोरी ऐसी है जो दुनियां भर में कोई भी नहीं जानते हैं। वंडरफुल बातें हैं। तुम संगमयुगी ब्राह्मण हो। यह चना भी बेच सकते हैं तो चित्र भी बेच सकते हैं। खर्चा जो भी होता है वो निकल सकता है। बहुत बिक सकता है। यह धंधा भी है। कैलेण्डर्स छपवाकर बेचते हैं। डबल वा डेढ़ गुना करके। तुम्हारा भी ऐसे ही हो सकता है। हमेशा धंधे में मनुष्य बहुत होशियार होते हैं। तुम्हारी यह चीजें ऐसी हैं जो हर एक लेवे। प्रदर्शनी में तो बहुत लेंगे। बैजिज भी बहुत बिक सकते हैं ;परंतु इतना ध्यान नहीं दिया जाता है। इनको तो कुछ आखर में नहीं आता है। यह लख करोड़ क्या है। सब खतम हो जावेंगे। बाबा को तो नशा रहता है। वर्णन करते हैं। यह करोड़ तो कुछ भी काम के नहीं है। स्वर्ग तो स्वर्ग है। यहां तो मनुष्य नर्क में हैं ना। सतयुग में तुम बहुत सुखी रहते हो। अथाह सुख है। तुम बहन–भाई सब कहते हो बाबा हम आपको फालो करेंगे। विजयमाला में आवेंगे। पढ़ाई एक ही है। पढ़ाने वाला भी एक ही है। अच्छा,मीठे2 सिकीलधे बच्चों को बापदादा का यादप्यार,गुडनाइट।